CBSE Test Paper 04

अपठित काव्यांश

1. **निम्नलिखित काव्यांशों को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए-**

   वह जो भावों से परिपूर्ण झूठे भवन के आधार
   की कल्पना है। आज के युग में अभावों से परिपक्व मानव की विडम्बना है।
   कण-कण भावहीन है,
   फिर भी भावों के प्रभाव का ही नाम जपना है।
   शरीर, मन, आत्मा सब पराई है,
   केवल धन ही अपना है।
   भ्रष्टाचार में लिप्त !
   आत्मा की आवाजों को सुनना, एक पागलपन है।
   सत्य, अहिंसा, प्रेम नहीं आज के आदर्श,
   बल्कि लोभ, लालच और कमाना है।
   मन में विदेश सुख की आस है,
   और पराया देश ही अपना है।
   ओ ! धनवृत्ति को आतुर नयन,
   देशप्रेम केवल एक विडम्बना है।

   i. आज के मानव के आदर्श कौन-कौन से हैं?
   ii. कवि ने कविता में किसकी ओर संकेत किया है?
   iii. आज के धन-लोलुप के लिए आत्मा की आवाज सुनना पागलपन क्यों है?
   iv. वर्तमान में मानव की क्या स्थिति हो गई है?
   v. कवि ने किसे विडम्बना कहा है और क्यों?

2. **निम्नलिखित काव्यांशों को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए-**

   जब बचपन तुम्हारी गोद में
   आने से कतराने लगे,
   जब माँ की कोख से झाँकती जिंदगी
   बाहर आने से घबराने लगे,
   समझो कुछ गलत है।
   जब तलवारें फूलों पर,
   जोर आजमाने लगे जब मासूम आँखों में
   खौफ़ नज़र आने लगे

समझो कुछ गलत है।
जब किलकारियाँ सहम जाएँ
जब तोतली बोलियाँ, खामोश हो जाएँ, समझो.....
कुछ नहीं, बहुत कुछ गलत है
क्योंकि जोर से बारिश होनी चाहिए थी,
पूरी दुनिया में, हर जगह, टपकने चाहिए थे आँसू,
रोना चाहिए था ऊपर वाले को, आसमाँ से फूट-फूटकर
शर्म से झुकनी चाहिए थीं, इंसानी सभ्यता की गर्दनें
शोक का नहीं, सोच का वक्त है
मातम नहीं, सवालों का वक्त है
अगर इसके बाद भी सर उठा कर
खड़ा हो सकता है इंसान
समझो कि बहुत कुछ गलत है।

i. कब कुछ भी गलत नहीं होगा?
ii. कवि के अनुसार अभी किसका वक्त है?
iii. 'जब तलवारें फूलों पर जोर अजमाने लगें, जब मासूम आँखों में खौफ नजर आने लगे' इस पंक्ति का क्या आशय है?
iv. कवि के अनुसार बहुत गलत कब है?
v. माँ की कोख से झाँकती जिंदगी को घबराहट क्यों हो सकती है?

CBSE Test Paper 04

अपठित काव्यांश

Answer

1. i. आज के मानव के आदर्श लोभ,लालच,धन का उपार्जन ही हैं।
   ii. कवि ने कविता में देश में वर्तमान में फैले भ्रष्टाचार की ओर संकेत किया है।
   iii. आजकल लोगों का मन, शरीर एवं आत्मा सब पराई हो चुकी है ऐसी स्थिति में आत्मा के द्वारा सच्ची सीख दिए जाने के कारण उसकी आवाज को धन लोलुपो ने पागलपन कहा है।
   iv. वर्तमान में लोगों का कण-कण भावहीन हो गया है। शरीर, मन,आत्मा सब पराई हो गयी है। भ्रष्टाचार में डूब कर वह केवल धन को अपना मानता है।
   v. कवि ने धनसंग्रह को आतुर मनुष्य के लिए देशप्रेम को एक विडम्बना कहा है।
2. i. जब सुनहरा बचपन आलिंगन कर गोद आने लगेगा तब कुछ भी गलत नहीं होगा।
   ii. कवि के अनुसार अभी शोक का नही सोच-विचार करने और सवालों के समाधान का वक्त है।
   iii. इस पंक्ति का आशय यह है कि जब मासूमों पर अत्याचार होने लगे और वे भय-ग्रस्त हो जाएँ तो समझो की कुछ गलत हो रहा है ।
   iv. जब मासूम किलकारियाँ सहम जाएँ और तोतली बोलियाँ खामोश हो जाएँ तथा इसके संरक्षक इसके बावजूद भी सर उठाकर चलने लगे तो समझना चाहिए कि कुछ नहीं बहुत कुछ गलत है।
   v. जब इस जिंदगी को ऐसा महसूस हो कि बाहर असुरक्षा है तो उसे घबराहट हो सकती है।